EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter)
Patron: Prof. R. G. Kothari
Chief Editor: Prof. Jignesh B. Patel
Email:- Mo. 9429429550 ctefeduinspire@gmail.com

"वसुधैव कुटुंबकम" के सिद्धांतों को वर्तमान शिक्षण-अधिगम विधियों में एकीकृत करना

डॉ. मगनलाल एस. मोलिया
प्रोफेसर और अध्यक्ष
शिक्षणाशास्त्र भवन सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, राजकोट

सारांश

प्रस्तुत पेपर "वसुधैव कुटुंबकम" के सिद्धांतों को वर्तमान शिक्षण-अधिगम विधियों में एकीकृत करना पर है। "वसुधैव कुटुंबकम" (पूरी दुनिया एक परिवार है) के सिद्धांतों को वर्तमान शिक्षण-अधिगम विधियों में एकीकृत करना भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 का मुख्य केंद्र है। इस प्राचीन भारतीय अवधारणा को ग्लोबल सिटीजनशिप एजुकेशन (GCED), भारतीय ज्ञान प्रणालियों (IKS), अनुभवात्मक शिक्षा, प्रोजेक्ट-आधारित शिक्षा और सामुदायिक सेवा जैसे आधुनिक दृष्टिकोणों के माध्यम से पाठ्यक्रम, शिक्षक प्रशिक्षण और स्कूल के माहौल में शामिल किया जा रहा है। इस एकीकरण का प्राथमिक उद्देश्य छात्रों में सहानुभूति, समानता, आपसी सम्मान, पर्यावरणीय जिम्मेदारी और वैश्विक सहयोग की भावना विकसित करना है, ताकि वे न केवल ज्ञानवान बनें बल्कि ऐसे वैश्विक नागरिक भी बनें जो दुनिया को एक परिवार के रूप में देखें, नैतिक रूप से जिम्मेदार हों और सतत विकास में योगदान दें। इस प्रयास को आज की विभाजित और असमान दुनिया में एकता और समावेशन के मूल्यों को बहाल करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जाता है।

मुख्य शब्द: वसुधैव कुटुंबकम, शिक्षण-अधिगम विधियाँ

परिचय :-

"वसुधैव कुटुंबकम" एक प्राचीन संस्कृत कहावत है, जिसका अर्थ है "पूरी दुनिया एक परिवार है"। यह विचार महा उपनिषद से आया है और वैश्विक एकता, सहानुभूति, आपसी सम्मान और सहयोग को बढ़ावा देता है। आज की वैश्वीकृत दुनिया में, जहाँ जलवायु परिवर्तन, आर्थिक असमानता, सांस्कृतिक विविधता और तकनीकी प्रगति जैसे मुद्दे प्रचलित हैं, यह विचार और भी महत्वपूर्ण हो गया है। इस विचार को भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 में एक प्रमुख स्थान दिया गया है, जो प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणालियों को आधुनिक शिक्षा के साथ जोड़ती है। इस लेख में, इस विचार को वर्तमान शिक्षण-अधिगम प्रथाओं में एकीकृत करने पर विस्तार से चर्चा की जाएगी, जिसमें मुख्य तत्व, रणनीतियाँ, उदाहरण, लाभ और चुनौतियाँ शामिल हैं।

वर्तमान शिक्षण-अधिगम प्रथाओं का संदर्भ

आज की शिक्षा प्रणाली मुख्य रूप से ज्ञान-आधारित और तकनीकी है, जिसमें विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (STEM) पर जोर दिया जाता है। विश्व स्तर पर, संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्य (SDG), विशेष रूप से SDG 4.7, शिक्षा को वैश्विक नागरिकता से जोड़ते हैं। भारत में, NEP 2020 शिक्षा को अधिक समावेशी, मूल्य-आधारित और समग्र बनाने की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है। यह नीति प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणालियों (IKS) जैसे वेद, उपनिषद और गुरुकुल प्रणाली को आधुनिक शिक्षा में एकीकृत करती है, जिससे "वसुधैव कुटुंबकम" को वैश्विक एकता और नैतिक जिम्मेदारी के रूप में स्थापित किया जाता है। इस विचार को शिक्षा में शामिल करके, छात्रों को पर्यावरण संरक्षण और मानवाधिकारों जैसी वैश्विक चुनौतियों

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

का सामना करने के लिए तैयार किया जाता है। NEP 2020 5+3+3+4 संरचना अपनाती है, जो फाउंडेशन स्टेज से लेकर सेकेंडरी स्टेज तक मूल्यों और वैश्विक दृष्टिकोणों को एकीकृत करती है।

एकीकरण की आवश्यकता और महत्व

आज की दुनिया में, बढ़ते विभाजन, असमानताओं और पर्यावरणीय संकटों के बीच, "वसुधैव कुटुंबकम" एकता का संदेश देता है। इस विचार को शिक्षा में एकीकृत करने से छात्रों में सहानुभूति, समानता और आपसी सम्मान विकसित होता है। NEP 2020 के अनुसार, इस विचार को एकीकृत करने से समग्र विकास होता है, जिसमें ज्ञान के साथ-साथ मूल्यों का भी विकास होता है। यह आवश्यकता अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि आधुनिक शिक्षा प्रणालियों में मूल्यों की कमी युवाओं में बढ़ते तनाव, असमानता और पर्यावरणीय अज्ञानता का कारण बन रही है। यह विचार वैश्विक नागरिकता शिक्षा (GCED) से जुड़ा है, जो SDG 4.7 के तहत वैश्विक चुनौतियों का समाधान करता है। इसका महत्व यह है कि यह स्टूडेंट्स को न सिर्फ़ जानकार बनाता है, बल्कि ज़िम्मेदार और सबको साथ लेकर चलने वाला नागरिक बनाता है, जो दुनिया को एक परिवार की तरह देखते हैं।

एकीकरण के तरीके और रणनीतियाँ

वर्तमान शिक्षा प्रणालियों में "वसुधैव कुटुंबकम" को एकीकृत करने के कई तरीके हैं। भारत में, इस विचार को NEP 2020 के माध्यम से शिक्षा प्रणाली में शामिल किया गया है, जिसने ग्लोबल सिटिज़नशिप एजुकेशन (GCED) को एक मुख्य घटक बनाया है। इस नीति के अनुसार, छात्रों को वैश्विक चुनौतियों के संबंध में पढ़ाया जाता है, जिसमें अनुभवात्मक शिक्षा, प्रोजेक्ट-आधारित शिक्षा और अंतर-सांस्कृतिक आदान-प्रदान शामिल है।

प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में समावेश :

प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में, इस विचार को प्रेम (प्यार), धर्म (जिम्मेदारी), अहिंसा (अहिंसा) जैसे अन्य हिंदू मूल्यों से जोड़कर एकीकृत किया जाता है। उदाहरण के लिए, बाली में विद्या कुमार स्टेट हिंदू किंडरगार्टन जैसे संस्थानों में, इन मूल्यों को मुख्य पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। इस विचार को भोजन साझा करने, चीजों को व्यवस्थित करने और समूह गतिविधियों जैसी दैनिक गतिविधियों के माध्यम से बढ़ावा दिया जाता है। पाठ्यक्रम में बाली लोककथाओं और खेलों का उपयोग करके मूल्यों को व्यावहारिक तरीके से सिखाया जाता है।

पाठ्यक्रम में समावेश : पाठ्यक्रम "वसुधैव कुटुंबकम" को वैश्विक एकता के रूप में प्रस्तुत करता है। NCERT और SCERT नई पाठ्यपुस्तकों में IKS को एकीकृत कर रहे हैं, जिसमें वेद, उपनिषद और प्राचीन विज्ञान के तत्व शामिल हैं। उदाहरण के लिए, पर्यावरण विज्ञान में प्रकृति के साथ एकात्मता और सामाजिक विज्ञान में विविधता के प्रति सम्मान। इस विचार को पाठ्यपुस्तकों में भी शामिल किया गया है। NCERT ने कक्षा 7 की सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तक में "भारत, कई लोगों का घर" शीर्षक वाले अध्याय में "वसुधैव कुटुंबकम" को शामिल किया है। यह अध्याय यहूदी और पारसी समुदायों के उदाहरण देकर दिखाता है कि भारत ने हमेशा विविधता को अपनाया है। इसका उद्देश्य छात्रों को यह दिखाना है कि यह विचार प्राचीन भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न अंग है।

शिक्षक प्रशिक्षण और पर्यावरणीय डिज़ाइन :

शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जाता है ताकि वे इन मूल्यों को कक्षा में लागू कर सकें। UGC 15 लाख शिक्षकों को IKS पर प्रशिक्षित करने की योजना बना रहा है। इस विचार को स्कूल के माहौल में विभिन्न संस्कृतियों के त्योहारों और परियोजनाओं के माध्यम से बढ़ावा दिया जा रहा है।

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

भाषा और सांस्कृतिक संवर्धन : भारतीय भाषा समिति द्वारा 12 भाषाओं में इंजीनियरिंग की किताबें प्रकाशित की गई हैं। माध्यमिक स्तर पर कोरियाई, जापानी जैसी विदेशी भाषाएँ पढ़ाई जा रही हैं ताकि छात्र वैश्विक संस्कृतियों को समझ सकें।

डिजिटल और तकनीकी दृष्टिकोण :

इस विचार को DIKSHA और AI-आधारित प्रगति कार्ड जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से विश्व स्तर पर बढ़ाया जा रहा है। विभिन्न विचारधाराओं को ट्रांसडिसिप्लिनरी लर्निंग के माध्यम से प्रबंधित किया जा रहा है।

उदाहरण और व्यावहारिक कार्यान्वयन

हम मौजूदा शिक्षा प्रणालियों में "वसुधैव कुटुंबकम" के विचार को इंटीग्रेट करने के उदाहरणों को और विस्तार से समझाएंगे। इन उदाहरणों में, हम भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020, शुरुआती बचपन की शिक्षा संस्थानों और वैश्विक कार्यक्रमों के व्यावहारिक कार्यान्वयन का विस्तार से वर्णन करेंगे। ये उदाहरण प्राचीन भारतीय ज्ञान को आधुनिक शिक्षा के साथ मिलाकर छात्रों को वैश्विक नागरिक बनाने पर केंद्रित हैं।

शुरुआती बचपन की शिक्षा में इंटीग्रेशन :

बाली में विद्या कुमार स्टेट हिंदू किंडरगार्टन का उदाहरण: बाली में विद्या कुमार स्टेट हिंदू किंडरगार्टन जैसे संस्थानों में, "वसुधैव कुटुंबकम" को प्रेम (प्रेमा), जिम्मेदारी (धर्म), अहिंसा और वैश्विक भाईचारे जैसे हिंदू मूल्यों से जोड़कर पाठ्यक्रम में इंटीग्रेट किया गया है। इस संस्थान में इस विचार को व्यावहारिक रूप से लागू करने के लिए निम्नलिखित तरीके अपनाए जाते हैं:

पाठ्यक्रम आधार में शामिल करना :

इन मूल्यों को सीखने के उद्देश्यों, दक्षता मानकों और उपलब्धि संकेतकों में स्पष्ट रूप से शामिल किया गया है। उदाहरण के लिए, प्रेम का मूल्य एक-दूसरे से प्यार करने और मदद करने की गतिविधियों के माध्यम से सिखाया जाता है; धर्म को उम्र के हिसाब से कामों जैसे कि घर के काम पूरे करना या खिलौनों को व्यवस्थित करना सिखाया जाता है; अहिंसा को अहिंसक तरीकों और शांतिपूर्ण विवाद समाधान के माध्यम से बढ़ावा दिया जाता है; और "वसुधैव कुटुंबकम" को वैश्विक भाईचारे की भावना के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

दैनिक गतिविधियाँ और खेल :

इन मूल्यों को बच्चों के साथ खाना साझा करने (प्रेमा), व्यक्तिगत सामान को व्यवस्थित करने (धर्म), शांतिपूर्ण विवाद समाधान की भूमिका निभाने (अहिंसा), और समूह में खेल खेलने (वसुधैव कुटुंबकम) जैसी गतिविधियों के माध्यम से व्यवहार में लाया जाता है। ये गतिविधियाँ न केवल बच्चों को ज्ञान देती हैं बल्कि उन्हें व्यावहारिक अनुभव भी देती हैं।

शिक्षक मॉडलिंग और पर्यावरण डिजाइन :

शिक्षक अपने व्यवहार के माध्यम से इन मूल्यों को प्रदर्शित करते हैं और उन्हें बाली संस्कृति-आधारित स्कूल के माहौल में शामिल करते हैं। इस प्रकार, बच्चों को कम उम्र से ही वैश्विक परिवार की भावना सिखाई जाती है, जो उन्हें सहानुभूति और समानता के मूल्यों से लैस करती है। यह दृष्टिकोण कम उम्र से ही बच्चों के व्यवहार और सोच को आकार देता है, जैसा कि जन्नत और सारी (2022) के एक अध्ययन में कहा गया है।

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के माध्यम से भारत में कार्यान्वयन :

वैश्विक नागरिकता शिक्षा (GCED): भारत की NEP 2020 ने "वसुधैव कुटुंबकम" को वैश्विक नागरिकता और नैतिक जिम्मेदारी से जोड़कर शामिल किया है। यह पॉलिसी यूनाइटेड नेशंस सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स (SDGs) के साथ जुड़ी हुई है, खासकर SDG 4.7, जिसमें स्टूडेंट्स को क्लाइमेट चेंज और ह्यूमन राइट्स जैसी ग्लोबल चुनौतियों के बारे में सिखाया जाता है।

करिकुलम में शामिल करना :

NEP 2020 के अनुसार, स्टूडेंट्स को यह विचार एक्सपीरिएंशियल लर्निंग के ज़रिए सिखाया जाता है। उदाहरण के लिए, कम्युनिटी सर्विस जैसे प्रोग्राम स्टूडेंट्स को समाज की ज़रूरतों के बारे में सिखाते हैं, साथ ही ग्लोबल एकजुटता और आपसी सम्मान को बढ़ावा देते हैं। इसमें, स्टूडेंट्स को अलग-अलग कल्चर के एक्सचेंज प्रोग्राम में हिस्सा लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

स्कूल और यूनिवर्सिटी लेवल पर लागू करना :

भारत में, ओम स्कूल जैसे संस्थान इस विचार को एकेडमिक करिकुलम के साथ मिलकर सिखा रहे हैं, जहाँ स्टूडेंट्स को सेवा, सम्मान और ग्लोबल परिवार की भावना पर ज़ोर दिया जाता है। इसके अलावा, NCERT की टेक्स्टबुक्स, जैसे कि क्लास 7 सोशल साइंस में "भारत, कई लोगों का घर" चैप्टर, इस विचार को अलग-अलग समुदायों के उदाहरणों के साथ पेश करता है।

फायदे और असर :

यह तरीका स्टूडेंट्स में इमोशनल रेगुलेशन और प्रोसोशल बिहेवियर को बढ़ाता है, जो महामारी के बाद के दौर में शिक्षा को फिर से डिज़ाइन करने के लिए ज़रूरी है।

ग्लोबल इम्प्लीमेंटेशन :

संयुक्त राष्ट्र और अन्य कार्यक्रम; विश्व स्तर पर, "वसुधैव कुटुंबकम" को ग्लोबल सिटीजनशिप एजुकेशन (GCED) और सस्टेनेबल डेवलपमेंट में शामिल किया गया है। इस विचार को संयुक्त राष्ट्र SDG 4.7 के तहत बढ़ावा दिया जाता है, जिसमें छात्रों को वैश्विक प्रासंगिकता और नैतिक मूल्यों के बारे में सिखाया जाता है।

सर्विस-लर्निंग कार्यक्रम :

इन कार्यक्रमों में, छात्रों को क्लासरूम लर्निंग को सामुदायिक सेवा के साथ मिलाकर सिखाया जाता है। उदाहरण के लिए, छात्रों को सामाजिक और पर्यावरणीय मुद्दों को संबोधित करने के लिए व्यावहारिक अनुभव दिया जाता है, साथ ही सहानुभूति, सहयोग और स्थिरता को बढ़ावा दिया जाता है।

यूनिवर्ससिटी प्रोजेक्ट :

सान्योगा संस्था द्वारा चलाया जाने वाला यह प्रोजेक्ट, प्राचीन गुरुकुल प्रणाली को आधुनिक शिक्षा के साथ मिलाकर "वसुधैव कुटुंबकम" को लागू करता है। यहाँ, छात्रों को समग्र विकास के लिए स्थायी जीवन और सामाजिक प्रगति पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जिसमें ज्ञान को व्यावहारिक तरीकों से लागू करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

उच्च शिक्षा में एकीकरण :

भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) पाठ्यक्रम: उच्च शिक्षा में, NEP 2020 के तहत, भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) को आधुनिक पाठ्यक्रम के साथ एकीकृत किया जा रहा है। विभिन्न संस्थानों में इस विचार को शामिल करके, छात्रों को सांस्कृतिक विरासत और नवाचार की समझ दी जाती है।

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

कार्यान्वयन के कदम :

शिक्षकों और नीति निर्माताओं को IKS-आधारित पाठ्यक्रम डिजाइन करने के लिए मार्गदर्शन दिया जा रहा है, जो "वसुधैव कुटुंबकम" को वैश्विक जुड़ाव के रूप में प्रस्तुत करता है। उदाहरण के लिए, वेदों के प्रभाव को आधुनिक शिक्षाशास्त्र के साथ मिलाकर पढ़ाया जा रहा है।

लाभ

यह एकीकरण छात्रों में भावनात्मक विनियमन, सामाजिक व्यवहार और सहानुभूति को बढ़ाता है। यह समग्र विकास को बढ़ावा देता है और उन्हें वैश्विक चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करता है। NEP 2020 के अनुसार, यह विचार छात्रों को नैतिक जिम्मेदारी और वैश्विक सहयोग की भावना सिखाता है। अन्य लाभों में सांस्कृतिक गौरव, पर्यावरणीय जागरूकता और नवाचार को बढ़ाना शामिल है, जो भारत को 'विश्व गुरु' के रूप में स्थापित करता है।

चुनौतियाँ और समाधान

इस एकीकरण में कुछ चुनौतियाँ हैं जैसे सीमित सामग्री, शिक्षक प्रशिक्षण की कमी और वैश्वीकरण के प्रभाव। अन्य चुनौतियाँ सांस्कृतिक पूर्वाग्रह, डिजिटल विभाजन और पारंपरिक और आधुनिक के बीच संतुलन हैं। समाधानों में शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम, सामुदायिक सहयोग, डिजिटल उपकरण और निरंतर मूल्यांकन शामिल हैं। NEP 2020 के तहत, UGC और AICTE जैसे संस्थान इन चुनौतियों से निपटने के लिए काम कर रहे हैं।

निष्कर्ष

"वसुधैव कुटुंबकम" को वर्तमान शिक्षण-अधिगम प्रथाओं में एकीकृत करना सिर्फ एक शैक्षणिक प्रयास नहीं है, बल्कि भविष्य की पीढ़ी को अधिक समावेशी, सहानुभूतिपूर्ण और जिम्मेदार वैश्विक नागरिक बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020 के ज़रिए आधुनिक शिक्षा के फ्रेमवर्क में इस प्राचीन भारतीय मूल्य को शामिल करके, भारत ने एक ऐसा रास्ता दिखाया है जो ज्ञान और मूल्यों के संतुलन पर आधारित है। ऐसे समय में जब दुनिया तेज़ी से बँट रही है और असमान हो रही है, यह विचार युवाओं में एकता, सहयोग और सामूहिक ज़िम्मेदारी की भावना पैदा कर सकता है। इसलिए, शिक्षा में "वसुधैव कुटुंबकम" को शामिल करना न केवल भारतीय शिक्षा प्रणाली के लिए एक सफलता होगी, बल्कि वैश्विक स्तर पर शांति, सस्टेनेबल डेवलपमेंट और मानवता के भविष्य के लिए भी एक महत्वपूर्ण योगदान होगा।

References

Chopra, R., & Pandey, S. (2023). National Education Policy 2020: Promises and prospects for higher education in India. ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts, 4(2), 4580–4583.

Government of India. (2020). National Education Policy 2020. Ministry of Education.

Kumar, A. K. (2023). The concept of Vasudhaiva Kutumbakam (The world is a family): Insights from the Mahopanisad. National Journal of Hindi & Sanskrit Research, 1(49), 42–45.

Ministry of Education, Government of India. (2020). National Education Policy 2020.

Nesari, T. (2023). Evidence-based traditional medicine for transforming global health: Aligning with Vasudhaiva Kutumbakam. Indian Journal of Medical Research, 158(2), 101–105.

Pathak, R. (2025). Re-envisioning global citizenship education through the lens of NEP 2020. International Education and Research Journal, 11(8).